॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

पञ्चदश (15वाँ) अध्याय

पुरुषोत्तमयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : reg.learngeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधः(श्) शाखम्, अश्वत्थं(म्) प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि, यस्तं(वँ) वेद स वेदवित्॥1॥

अधश्चोर्ध्वं(म्) प्रसृतास्तस्य शाखा,
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि,
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके॥2॥

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते,
नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं(म्) सुविरूढमूलम्,
असङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा॥3॥

ततः(फ्) पदं(न्) तत्परिमार्गितव्यं(यँ),
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं(म्) पुरुषं(म्) प्रपद्ये,
यतः(फ्) प्रवृत्तिः(फ्) प्रसृता पुराणी॥4॥

Learngeeta.com
LEARN GEETA

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा,
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः(स्) सुखदुःखसञ्ज्ञैः(र्),
गच्छन्त्यमूढाः(फ्) पदमव्ययं(न्) तत्॥5॥

न तद्भासयते सूर्यो, न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते, तद्धाम परमं(म्) मम॥6॥

ममैवांशो जीवलोके, जीवभूतः(स्) सनातनः।
मनः(ष्) षष्ठानीन्द्रियाणि, प्रकृतिस्थानि कर्षति॥7॥

शरीरं(यँ) यदवाप्नोति, यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति, वायुर्गन्धानिवाशयात्॥8॥

श्रोत्रं(ञ्) चक्षुः(स्) स्पर्शनं(ञ्) च, रसनं(ङ्) घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं(वँ्), विषयानुपसेवते॥9॥

उत्क्रामन्तं(म्) स्थितं(वँ्) वापि, भुञ्जानं(वँ्) वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति, पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः॥10॥

यतन्तो योगिनश्चैनं(म्), पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो, नैनं(म्) पश्यन्त्यचेतसः॥11॥

यदादित्यगतं(न्) तेजो, जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ, तत्तेजो विद्धि मामकम्॥12॥

गामाविश्य च भूतानि, धारयाम्यहमोजसा।
पुष्णामि चौषधीः(स्) सर्वाः(स्), सोमो भूत्वा रसात्मकः॥13॥

Learngeeta.com

अहं(वँ) वैश्वानरो भूत्वा, प्राणिनां(न्) देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः(फ्), पचाम्यन्नं(ञ्) चतुर्विधम्॥14॥

सर्वस्य चाहं(म्) हृदि सन्निविष्टो
मत्तः(स्) स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं(ञ्) च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥15॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः(स्) सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥16॥

उत्तमः(फ्) पुरुषस्त्वन्यः(फ्), परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य, बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥17॥

यस्मात्क्षरमतीतोऽहम्, अक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च, प्रथितः(फ्) पुरुषोत्तमः॥18॥

यो मामेवमसम्मूढो, जानाति पुरुषोत्तमम्।
स सर्वविद्भजति मां(म्), सर्वभावेन भारत॥19॥

इति गुह्यतमं(म्) शास्त्रम्, इदमुक्तं(म्) मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्, कृतकृत्यश्च भारत॥20॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

Ver 7.1
सप्तम संस्करण

स्तर 1 उच्चारण नियमावली

- **ह्रस्व स्वर** (उच्चारण समय एक काल) अ इ उ ऋ
- **दीर्घ स्वर** (उच्चारण समय दो काल) आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ
- **वर्गीय व्यञ्जन**

(क वर्ग) कण्ठ से उच्चारित	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	अनुनासिक व्यञ्जन
(च वर्ग) तालू से उच्चारित	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
(ट वर्ग) मूर्धा से उच्चारित	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	
(त वर्ग) दाँतों से उच्चारित	त्	थ्	द्	ध्	न्	
(प वर्ग) ओंठों से उच्चारित	प्	फ्	ब्	भ्	म्	

- **अवर्गीय व्यञ्जन**

अन्तस्थ	य्	र्	ल्	व्	
ऊष्म	श्	ष्	स्	ह्	

- **अनुस्वार** (वर्ण के ऊपर आने वाला बिन्दु) ं (जैसे संशय, अहिंसा, एवं आदि)
- **विसर्ग** (वर्ण के बाद दो बिन्दु) ः (पुरुषः, दुःख, मैत्रः आदि)
- **संयुक्त वर्ण** (एक से अधिक व्यञ्जनों से बना वर्ण)
  जैसे **द्ध**=द्+ध, **प्र**=प्+र, **न्न**=न्+न, **र्य**=र्+य, **क्ष**=क्+ष, **ज्ञ**=ज्+ञ, **त्र**=त्+र, **क्त्या**= क्+त्+या
- **अनुस्वार(ं) उच्चारण नियम**
  - अनुस्वार के पश्चात् वर्गीय व्यञ्जन आने पर उसी वर्ग के अनुनासिक का उच्चारण होगा।
  - अवर्गीय व्यञ्जन य, व, ल् आने पर क्रमशः अनुनासिक यँ, वँ, लँ का उच्चारण होगा।
  - शेष अन्य किसी भी वर्ण के आने पर पद के बीच में वँ जैसा, पद के अंत में म् का उच्चारण होगा।
- **विसर्ग(ः) उच्चारण नियम** विसर्ग(ः) का उच्चारण पूर्व/पर वर्ण सन्दर्भानुसार ह, ख, फ, श, ष, स, र जैसा होगा।
- **आघात(॥) उच्चारण नियम** संयुक्त वर्ण से पूर्व वर्ण पर आघात (बल) देना चाहिये। '॥' का चिह्न प्रत्येक आवश्यक वर्ण के ऊपर दिया गया है।

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।